Date
23/04/2020

बी० ए० पार्ट – II, पेपर – IV (1)

डॉ० चन्दा कुमारी, गेस्ट टीचर
हिन्दी विभाग
रोहतास महिला कॉलेज सासाराम

चन्द्रगुप्त नाटक का सन्दर्भ एवं प्रसंग

(1) "आर्यावर्त का भविष्य लिखने के लिए कुचक्र और प्रतारणा की लेखनी और मसि प्रस्तुत हो रही है। उत्तरापथ के खण्डराज द्वेष से जर्जर हैं। शीघ्र भयानक विस्फोट होगा।"

सन्दर्भ – जयशंकर प्रसाद रचित "चन्द्रगुप्त" नाटक का अवतरण

प्रसंग :– तक्षशिला के गुरुकुल में मालव का राजकुमार सिंहरण एवं मगध के सेनापति का पुत्र चन्द्रगुप्त मौर्य शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। चाणक्य ने भी इसी गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त की है और अब वह यहीं पर अर्थशास्त्र का अध्यापन कर अपनी गुरुदक्षिणा चुका रहा है। आचार्य चाणक्य ने जब सिंहरण से पूछा की तक्षशिला में यवनों के दूत क्यों आये थे, तब सिंहरण ने कहा कि आर्यावर्त के विरुद्ध कोई षड्यंत्र किया जा रहा है। शीघ्र ही उसका दुष्परिणाम सामने आ जायेगा।

व्याख्या :– आचार्य चाणक्य ने जब मालव राजकुमार सिंहरण से यह प्रश्न किया कि क्या तुम बता सकते हो कि यवनों के दूत तक्षशिला में क्यों आये हैं, तब सिंहरण कहने लगा कि मैं इस बात का पता लगाने का प्रयास कर रहा हूँ। अभी मुझे पूरी जानकारी तो नहीं है, किन्तु इतना अनुमान अवश्य लगा रहा हूँ कि ये लोग भारतवर्ष के विरुद्ध कोई षड्यंत्र कर रहे हैं,

आर्यावर्त का भविष्य वे कुचक्र रूपी लेखनी और छल-कपट रूपी स्याही से लिखने का प्रयास कर रहे हैं। अर्थात् सबल लोग तक्षशिला के राजा से मिलकर कोई षड्यंत्र कर रहे हैं और छल-कपट का सहारा लेकर ये विदेशी हमारे देश पर आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं। खेद की बात यह है कि, उत्तरापथ के छोटे-छोटे राज्य पारस्परिक द्वेष से जर्जर एवं छिन्न-भिन्न हैं, जिसके कारण वे सब एक साथ मिलकर विदेशी शत्रु का मुकाबला नहीं करेंगे। साथ ही पारस्परिक द्वेष एवं ईर्ष्या के कारण हो सकता है कि कोई राज्य अपने ही पड़ोसी राज्य के विरुद्ध युद्ध छेड़ दे और इसमें विदेशी सबलों की सहायता ले। निश्चय ही देश का भविष्य सुरक्षित नहीं है। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि, शीघ्र ही कोई भयानक विस्फोट युद्ध के रूप में होने वाला है।

विशेष :- (1) चन्द्रगुप्त नाटक का एक उद्देश्य विदेशी आक्रमणकारियों से देश को सुरक्षित बनाये रखना भी है। नाटक के प्रारंभ में ही इसका संकेत दे दिया गया है।

(2) इस अवतरण से राजकुमार सिंहरण के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है। वह वीर, सजग एवं साहसी युवक है।

(3) तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का बोध इस अवतरण से हो रहा है। इस समय उत्तरापथ के राज्य पारस्परिक द्वेष से जर्जर हो रहे थे तथा उनमें एकता का अभाव था। वे परस्पर मिलकर विदेशी शत्रु का मुकाबला करने को तत्पर न थे।

(4) कुचक्र की लेखनी, प्रतारणा की बस्याही में रूपक अलंकार है,

(5) परिष्कृत, संस्कृतनिष्ठ परिमार्जित हिन्दी का प्रयोग किया गया है, नाटक की ऐसी भाषा उसकी रंगमंचीयता में बाधक है।

Scanned with CamScanner